Shodh Sari-An International Multidisciplinary Journal

@2024 International Council for Education Research and Training
2024, Vol. 03, Issue 01, 66-70
ISSN: 2959-1376
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7655

21वीं सदी में कक्षा शिक्षा के सन्दर्भ में परिवर्तित शिक्षक की भूमिका

Chavada, Jignasa K.
Smt. J. J. Kundaliya Graduate Teacher's College, Bedi para, Saint Kabir road, Rajkot: 360003 (Gujarat, India)

सारांश

यह लेख 21वीं सदी की कक्षा शिक्षा में शिक्षक की भूमिका में आए बदलावों को प्रस्तुत करता है। 21वीं सदी विज्ञान और प्रौद्योगिकी की सदी है। साथ ही यह युग ज्ञान के विस्फोट का भी है। सूचना प्रौद्योगिकी ने मानव जीवन से जुड़े हर क्षेत्र में प्रवेश कर लिया है और यह प्रभावी हो गई है, जिससे ज्ञान की सीमाएँ अब सीमित नहीं रह गई हैं। इसके कारण हर क्षेत्र में विकास बाधित हुआ है। इन सबमें शिक्षा एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। इसका कार्य कक्षा शिक्षण को शिक्षक द्वारा प्रभावी बनाया जाता है। अतः कक्षाओं में शिक्षकों द्वारा ज्ञान अर्जन की प्रक्रिया विज्ञान और प्रौद्योगिकी के कारण आधुनिक हो गई है। इस आधुनिक शिक्षा प्रक्रिया को प्रभावी बनाने वाला शिक्षक इस सदी में एक टेक्नोक्रेट और फैसिलिटेटर बन गया है। इसीलिए 21वीं सदी की शिक्षा वर्चुअल क्लासरूम और होम स्कूलिंग के माध्यम से संभव है। तो प्रस्तुत लेख में कक्षा शिक्षा के दौरान शिक्षक द्वारा बनाए रखे जाने वाले सामाजिक मूल्यों, कक्षा शिक्षा के संदर्भ में 21वीं सदी के शिक्षक में आधुनिकता, 21वीं सदी के शिक्षक में सूचना प्रौद्योगिकी कौशल, कागज-पेंसिल रहित शिक्षण, ऑनलाइन शिक्षण-परीक्षण-मूल्यांकन में शिक्षक की भूमिका, इंटरनेट के माध्यम से होम स्कूल, ऑनलाइन मार्गदर्शक के रूप में शिक्षक की भूमिका, विशिष्ट विषयों को पढ़ाने में शिक्षक की भूमिका, बहुआयामी बुद्धि के विकास के संदर्भ में शिक्षक, शिक्षक में वैज्ञानिक विचार - वैज्ञानिक दृष्टिकोण - वैज्ञानिक एटिट्यूड6., शिक्षक द्वारा पारंपरिक मूल्यों का संरक्षण एवं आधुनिक मूल्यों को अपनाना, शिक्षक का शिक्षण-अनुसंधान-विस्तार की ओर सुझाव इत्यादि बातों को समाविष्ट किया गया है।

मुख्य शब्दः नवोन्मेषी शिक्षक, सामाजिक मूल्य, शिक्षण प्रौद्योगिकी, शिक्षक की भूमिका

भूमिका. 21वीं सदी की शिक्षा के लिए कक्षाएँ ज्ञान, समझ, कौशल और उन सभी को व्यवहार में लागू करने में अधिक सक्रिय हो जाती हैं। अब शिक्षा पाठ्यक्रम, पाठ्यचर्या, विद्यालय प्रबंधन, कक्षा-कक्ष, शिक्षण पद्धति-तकनीक, कक्षा-व्यवहार, कक्षा-परिक्रमण आदि में परिवर्तन हुए हैं । इसका सीधा प्रभाव शिक्षकों

@2024 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2024, Vol. 03, Issue 01, 66-70
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7655

की भूमिका पर पड़ा है। इसलिए, 21वीं सदी की कक्षाओं की शिक्षा के लिए शिक्षक की भूमिका बदल गई है। इसलिए अब शिक्षक आधुनिक शिक्षा के लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित कर पढ़ा रहे हैं। अपनी आधुनिक शिक्षा के लिए विशिष्ट लक्ष्य निर्धारित करके, वह पाठ्यक्रम का चयन करता है, जानकारी एकत्र करता है, ईन्स्ट्युमेन्ट्स एकत्र करता है और 21वीं सदी के कक्षा शिक्षक बनने के अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए लगातार ध्यान रखता है।

कक्षा शिक्षण के दौरान शिक्षक द्वारा सामाजिक मूल्यों को बनाए रखना. शिक्षक कक्षा में बनाए रखे जाने वाले स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व, सामाजिक न्याय और व्यक्तिगत सम्मान के सामाजिक मूल्यों को जानता है, इसलिए वह समान अवसर के लिए आत्म-सम्मान के साथ स्वतंत्र रूप से कक्षा शिक्षण में बदलाव करता है। साथ ही, कक्षा शिक्षण में सच्चाई, सरलता, नियमितता, सटीकता और ईमानदारी के नैतिक मूल्य शिक्षक बना लेता हैं। बदलते समाज और संस्कृति का शिक्षा पर प्रभाव पड़ता है और शिक्षक की भूमिका समाज या संस्कृति में परिवर्तन के वाहक के रूप में होती है। इसलिए शिक्षक की विशेषताओं पर भी विचार किया गया है ।

21वीं सदी में कक्षाकक्ष संदर्भों में शिक्षक में आधुनिकता. 21वीं सदी के शिक्षक के व्यक्तित्व निर्माण में परिवर्तन आ रहे हैं। इसके लिए छात्र के परिवर्तनकारी व्यक्तित्व को ढालना शिक्षक की भूमिका है। तदनुसार, शिक्षकों को छात्रों में मानसिक परिवर्तन लाने के लिए उनके मानसिक स्तर को ऊपर उठाना होगा।

इस सदी के छात्रों का पालन-पोषण 21वीं सदी के औद्योगीकरण और आधुनिकीकरण के साथ-साथ लोकतांत्रिक शासन प्रणालियों के कारण हो रहे सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों के बीच हो रहा है। साथ ही, ज्ञान विस्फोट के इस युग में यह विज्ञान और प्रौद्योगिकी की सदी है। यानी भौतिक सुविधाओं से संपन्न शिक्षक अपनी जीवनशैली और शिक्षा में भी आधुनिक सोच वाले हो गये हैं । फिर शिक्षक का ज्ञान, समझ, कौशल, अनुप्रयोग, रुचि, दृष्टिकोण और प्रशंसा प्रमुख होती जा रही हैं।

21वीं सदी के शिक्षक में सूचना प्रौद्योगिकी कौशल. वर्तमान समय के शिक्षक ने ऑनलाइन सूचना संस्करण का व्यापक उपयोग किया है। इंटरनेट, कंप्यूटर, मोबाइल, गूगल, यूट्यूब, ट्विटर आदि के उन्नत उपयोग से उसे घर बैठे ही सूचना स्रोत मिल जाते हैं। इसलिए, इस प्रकार की तकनीक का उपयोग करने की क्षमता 21वीं सदी के शिक्षक की विशेषता है।

कागज-पेंसिल रहित शिक्षण. कागज और पेंसिल के आधार पर लिखना आज के शिक्षक को पुराना लगता है। अब शिक्षक के शिक्षण में लिखना, पढ़ना, गणना जैसी तकनीकें बिना कागज-पेंसिल के सूचना प्रौद्योगिकी उपकरणों के माध्यम से की जाती हैं।

शिक्षक अब स्मार्ट फोन, पर्सनल कंप्यूटर, लैपटॉप आदि के उपयोग के साथ नोटबुक, पेन, पेंसिल आदि के

@2024 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2024, Vol. 03, Issue 01, 66-70
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7655

उपयोग से बाहर आ गया है और उसमें कागज-पेंसिल रहित शिक्षक की विशेषताएं आ गई हैं।

ऑनलाइन शिक्षण-परीक्षण-मूल्यांकन में शिक्षकों की भूमिका. इंटरनेट का बुनियादी ढांचा इस हद तक उपलब्ध हो गया है कि अब शिक्षक के पास कई नेट आधारित उपकरण उपलब्ध हो गए हैं। तो उसके आधार पर अब उन्हें ऑनलाइन शिक्षा का गैप मिल गया है। अब इस तकनीक के इस्तेमाल से छात्रों का परीक्षण और मूल्यांकन भी आसान हो गया है। इस प्रकार की सूचना प्रौद्योगिकी का ज्ञान, समझ, कौशल और उसके अनुप्रयोग की विशेषता शिक्षक द्वारा अर्जित की जाती है।

इंटरनेट के माध्यम से घर ही विद्यालय . एक छात्र किसी भी स्कूल में अपना पंजीकरण कराता है और अपने घर के एक कमरे में अपने सीखने की तकनीक स्थापित करता है। जिसमें मोबाइल, कंप्यूटर, लैपटॉप, टीवी, प्रोजेक्टर आदि को इंटरनेट से कनेक्ट करके एक वर्चुअल क्लासरूम बनाया जाता है। इस आभासी कक्षा में, प्रोफेसर दुनिया में घर पर बैठता है और उन्नत शिक्षा की विशेषता के साथ संयुक्त पढ़ाई होगी है । तब शिक्षक को सुविधाप्रदाता की भूमिका निभानी होगी। छात्र को पढ़ाने की भूमिका से बाहर आकर शिक्षक को स्व-शिक्षण दृष्टिकोण के साथ छात्र को पढ़ाना है ।

ऑनलाइन मार्गदर्शक के रूप में शिक्षकों की भूमिका. 21वीं सदी का छात्र जो घर पर उन विषयों का अध्ययन करने में सक्षम होने की संभावनाओं का लाभ उठाता है, जब उसे अपनी शिक्षा के विषय या सामग्री के बारे में कोई जानकारी नहीं होती है तो वह स्कूल शिक्षक को बुलाता है और मार्गदर्शन प्राप्त करता है। फिर तो टीचर को सिर्फ टिप्स ही देने होंगे. हर चीज़ सिखानी नहीं पड़ती । यहां शिक्षक की भूमिका एक सुविधाप्रदाता या मार्गदर्शक की होती है। जिसमें शिक्षक छात्र को कुछ सुविधा या मार्गदर्शन प्रदान करता है। जो विद्यार्थी को स्वाध्याय के लिए प्रेरित करता है।

उन्नत शिक्षा की विशेषता के साथ संयुक्त पढ़ाई होती है तब शिक्षक को सुविधाप्रदाता की भूमिका निभानी होगी। छात्र को पढ़ाने की भूमिका से बाहर आकर शिक्षक को स्व-शिक्षण दृष्टिकोण के साथ छात्र को पढ़ाना होगा।

विशिष्ट विषयों को पढ़ाने में शिक्षक की भूमिका. सूचना प्रौद्योगिकी की सहायता से भाषा, साहित्य, गणित और विज्ञान जैसे विषयों का अध्ययन घर पर ही किया जा सकता है। लेकिन संगीत, नृत्य, खेल, ललित कला जैसे कुछ विशेष विषयों की शिक्षा के लिए अध्येता उन विषयों की विशेष कक्षाएं भरते हैं। वहां व्यावहारिक अभ्यास से प्रशिक्षण लेकर वह उस कला या खेल में पारंगत हो जाता है। इस प्रकार के प्रशिक्षण के लिए शिक्षक की विशेष भूमिका होती है।

एकाधिक बुद्धि कौशल के विकास के सन्दर्भ में शिक्षक की भूमिका. 21वीं सदी का शिक्षक बुद्धि के विकास में एक शक्ति बन जाता है। वर्तमान शिक्षा में बहुमुखी बौद्धिक विकास दिखाई देता है। इसमें भौतिक बुद्धि, सामाजिक बुद्धि, व्यावहारिक बुद्धि, आर्थिक बुद्धि,

@2024 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2024, Vol. 03, Issue 01, 66-70
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7655

भावनात्मक बुद्धि, सांस्कृतिक बुद्धि और तकनीकी बुद्धि का विकास शामिल है। इस प्रकार की बुद्धि विकसित करने वाले शिक्षकों का बहुआयामी बौद्धिक विकास आवश्यक हो जाता है।

शिक्षक में वैज्ञानिक विचार -वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं विज्ञान एटिट्यूड. 21वीं सदी के शिक्षक का दृष्टिकोण मानवतावादी और वैज्ञानिक जीवन शैली बन जाता है। अब विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्रमिक विकास का समय है। अतः अध्येता का मनोविज्ञान विचार के अध्ययन में विश्वास करता है। इस प्रकार, कक्षा को इस प्रकार पढ़ाना शिक्षक की भूमिका है कि छात्र में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित होने के साथ-साथ वैज्ञानिक दृष्टिकोण भी विकसित हो।

शिक्षक द्वारा पारंपरिक मूल्यों का संरक्षण एवं उन्नत मूल्यों की स्वीकृति. 21वीं सदी की शिक्षा के संदर्भ में, पारंपरिक सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक मूल्यों को संरक्षित करने वाली कक्षा शिक्षा की आवश्यकता है। साथ ही इन तीन प्रकार के उन्नत मूल्यों को चिह्नित करने की विशेषता भी छात्रों में पैदा होनी चाहिए, इसलिए शिक्षक की शिक्षण तकनीकों का उपयोग तदनुसार किया जाता है।

शिक्षा-अनुसंधान-विस्तार के लिए शिक्षक की चुनौती. 21वीं सदी की शिक्षा के विकास के अनुरूप, शिक्षकों में शिक्षण के प्रति जुनून, अनुसंधान में रुचि और सेवाओं के विस्तार में वृद्धि हो रही है। सिर्फ किताबी ज्ञान नहीं बल्कि उन्नत तकनीक के माध्यम से शिक्षा देने का जुनून। शिक्षक को ज्ञान के निर्माता और समाज तक उसके विस्तार के रूप में जाना जाता है। अध्ययन के कई पाठ्यक्रमों और विभिन्न विषयों के माध्यम से साहित्यिक और व्यावसायिक शिक्षा 21वीं सदी की कक्षा शिक्षा की विशेषता है। तदनुसार, शिक्षक की भूमिका का दायरा विस्तारित हुआ है। साथ ही, अब एक शिक्षक के लिए शिक्षा की सीमाएँ उसके अपने जिले, राज्य या राष्ट्र तक ही सीमित नहीं हैं, वह स्वयं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर है। शिक्षक को उन्नत शिक्षा का ज्ञान और कौशल प्राप्त करना होगा । तदनुसार, शिक्षक की तैयारी बढ़ जाती है। जिससे एक शिक्षक की भूमिका व्यक्ति के सर्वांगीण विकास, मन की विशालता और इंसान बनने की भावना जैसी बन गई है। 21वीं सदी की कक्षाओं में शिक्षक शिक्षा के विस्तारित क्षितिज को ध्यान में रखते हुए, इस सदी में शिक्षक की भूमिका अथक, प्रयोगात्मक, उत्साही, भावुक, नवोन्मेषी, कड़ी मेहनत करने वाली और तकनीकी होती जा रही है। ' जैसा शिक्षक ऐसा राष्ट्र 'की कहावत के अनुरूप विकास करने वाले शिक्षक ने 21वीं सदी की कक्षाओं में शैक्षिक विकास की भूमिका निभाकर राष्ट्र के विकास में योगदान दिया है।

उपसंहार. प्रस्तुत लेख में यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि 21वीं सदी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के कारण ज्ञान विस्फोट की सदी है। अतः मानव जीवन से जुड़े प्रत्येक क्षेत्र में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के माध्यम से ज्ञान के संचार से विकास की दिशाएँ खुली हैं। शिक्षा मानव जीवन के लिए एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। इसके विनियोजन के लिए स्कूल की कक्षाओं और शिक्षकों की

@2024 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2024, Vol. 03, Issue 01, 66-70
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7655

भूमिका महत्वहीन नहीं है। कक्षाओं का आधुनिकीकरण किया गया है और शिक्षक 21वीं सदी की कक्षा में सीखाने के लिए सुसज्जित हैं। शिक्षकों ने कक्षा शिक्षण की क्षमता में वृद्धि की है। जिसका प्रयोग कक्षा शिक्षण में कर्तव्यनिष्ठा से किया जा रहा है और शिक्षकों आधुनिक शिक्षा के रंग में रंगा रहे है।

सन्दर्भ.

1. *https://gujkk.blogspot.com*. (2018/08). Retrieved from https://gu.vikaspedia.in education
2. Retrieved from https://www.inshod.org ...> PDF
3. कुमारन. (2023). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की अंतर्दृष्टि एवं प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा. *Shodh Sari-An International Multidisciplinary Journal*, *02*, *03*, 106–113. doi:10.59231/sari7594
4. Fatima, I. (2023). Role of Teachers to impart quality education for equitable learning. *Shodh Sari-An International Multidisciplinary Journal*, *02*(3), 462–471. doi:10.59231/SARI7619
5. Kumar, N. (2023). A study of the holistic and multidisciplinary education and its major challenges in the Special Perspectives of National Education Policy, 2020. *Shodh Sari-an International Multidisciplinary Journal*, *02*(01), 44–53. doi:10.5281/zenodo.7752390
6. 6. कुमारमुनेद्र. (2023). नए भारत का निर्माण- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. *Shodh Sari-An International Multidisciplinary Journal*, *02*(01), 109–115. doi:10.5281/zenodo.7785192
7. 7. Layek, P. (2023). Higher education in India: Opportunities, challenges and solutions. *Shodh Sari-an International Multidisciplinary Journal*, *02*(01), 54–60. doi:10.5281/zenodo.7752423

Received on Sep 25, 2023
Accepted on Nov 13, 2023
Published on Jan 01, 2024